Vol 6 Issue 9 June 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Awadhesh Kumar Shirotriya

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.oldror.lbp.world

ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 3.8014(UIF)

REVIEW OF RESEARCH

VOLUME - 6 | ISSUE - 9 | JUNE - 2017

आचार्य पाणिनि के अनन्तरापत्य, गोत्रापत्य एवं युवापत्यादि अपत्यार्थों का सामाजिक सन्दर्भों

डॉ॰ जागृति के॰ दवे
विभागाध्यक्ष संस्कृत विभाग , श्री दिग्विजयग्राम पंचायत संचालित आर्टस एण्ड कॉमर्स कॉलेज दिग्विजयग्राम (सिक्का) (जि॰ जामनगर)

सारांश

पाणिनि (400ई0पू0) तद्धितधिकार के अन्तर्गत अपत्यार्थक प्रक्रिया को समविष्ट किया है। इस शोधपत्र में अनन्तरापत्य, गोत्रापत्य एवं युवापत्यादि अपत्यार्थों का सामाजिक सन्दर्भों को रेखांकित करते हुये परिचय दिया गया है। अपत्यार्थक प्रकृति एवं प्रत्ययों का अर्थ व रूपरचना की दृष्टि से वर्गीकरण करते हुये विवेचन किया गया है। अन्त में संस्कृत अपत्यार्थक रूपों की आर्येतर भाषाओं से तुलना करते हुये यह देखने का प्रयास किया गया है कि क्या यह अपत्यार्थक प्रक्रिया किसी अन्य भाषा के प्रभाव का परिणाम तो नहीं है? अन्ततः शोधपत्र के माध्यम से यह सुसिद्ध होता है कि पाणिनि की अपत्यार्थक प्रक्रिया संस्कृत भाषा का अपना स्वयं का विकास है।

प्रस्तावना

आचार्य पाणिनि (400ई0पू0) ने लगभग चार हजार सूत्रों की रचना की है, जिनके द्वारा वे लौकिक व वैदिक दोनों प्रकार के संस्कृत रूपों को अनुशासित करते हैं। पाणिनीय व्याकरण संस्कृत भाषा की विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है जिसमें प्रकृति, प्रत्यय आदेश, आगमादि प्रदर्शनपूर्वक पदार्थ का विवेचन किया जाता है। आचार्य इन्द्र को इस पद्धति का आदि प्रर्वतक माना जाता है।

पाणिनि ने तद्धिताधिकार के अन्तर्गत अपत्यार्थक प्रक्रिया को समाविष्ट किया है। 'तद्धित' यह एक समस्तपद है जो कि 'तत्' एवं 'हित' इन दो पदों के योग से बना है। न्यासकार इसकी व्युत्पत्ति करते हैं–– "तेभ्यो हितास्तद्धिताः" अर्थात् जो प्रत्यय लौकिक, वैदिक शब्दों में अथवा संज्ञा, सर्वनाम आदि शब्दों में जुड़कर अर्थ व रूप के विशेषीकरण के द्वारा उनका हित (वर्धन) करें उन्हें 'तद्धित' कहते हैं। सुबन्त पद तद्धित प्रत्ययों की प्रकृति है। तद्धित प्रत्यय लगने पर शब्द विशिष्टार्थबोधक पद बन जाता है। पाणिनि अनुशासन में तद्धित को 'पदविधि' माना गया है। समर्थ परिभाषा के अनुसार पदविधि समर्थाश्रित होती है– समर्थानि पदानि आश्रयः = प्रकृतिः यस्य सः। इस प्रकार 'समर्थपद' तद्धित प्रत्ययों की प्रकृति होती है। समर्थ का अर्थ है 'शक्त' अर्थात् जिसमें अर्थ प्रतिपादन की क्षमता हो। प्रकृति व प्रत्यय के योग से निष्पन्न शब्द पद बनता है उसी में अर्थ प्रतिपादन की क्षमता होती है। मेक्डानल ने भी इसी आशय को अपने शब्दों में व्यक्त किया है–ैमबवदकंतल दवउपदंस ेजमउे ंतम जीवेम कमतपअमक तिवउ जमउे ंसतमंकल मदकपदह पद `नीपिगण

भाष्यकार ने अर्थवैशिष्ट्य की दृष्टि से तद्धित प्रत्ययों को तीन भागों में वर्गीकृत किया है।

क– अस्वार्थिक
ख– स्वार्थिक
ग– अत्यन्त स्वार्थिक। अपत्यार्थक तद्धित प्रत्यय अस्वार्थिक प्रत्ययों की श्रेणी में आते हैं।

अपत्यार्थक तद्धित रूपों का स्वरूप :

क) अपत्यार्थ :

'अपत्य' शब्द संतानवाचक है, वह संतान पुत्र या पुत्री उभयरूप हो सकती है। यास्क अपत्य शब्द का निर्वचन करते हैं––(1) अपततं भवति = सन्तान पिता के वंश को फैलाने वाली होती है। (2) नानेन पततीति वा = अथवा सन्तान के कारण वंश नष्ट नहीं होता है।

समाज में अनेक प्रकार के सम्बन्ध प्रचलित होते हैं, उनका उल्लेख तदानीन्तन भाषा–साहित्य में मिलता है। माता–पिता व सन्तान का सम्बन्ध एक प्रमुख सामाजिक सम्बन्ध है, इसके वाचक शब्दों को अपत्यार्थक शब्द कहते हैं। ऋग्वैदिक काल से लेकर पाणिनिकाल तक संस्कृत भाषा में विविध अपत्यार्थक शब्द प्राप्त होते हैं। इन सबका सूक्ष्मता से परीक्षण करने पर ज्ञात होता है कि प्रारम्भ में इन शब्दों का प्रयोग 'अपत्य सम्बन्ध' या वंश बताने के उद्देश्य से किया गया किन्तु उत्तरोत्तर सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक प्रभावों के कारण अपत्यार्थ में विविध अर्थ समाहित होते चले गये।

पाणिनि ने अपत्य शब्द को तीन अर्थों में प्रयुक्त किया है–
(क) अनन्तरापत्य / अपत्य = पुत्र
(ख) गोत्रापत्य = पौत्रप्रभृति सन्तति
(ग) युवापत्य = प्रपौत्र
(क) अनन्तरापत्य / अपत्य :

यह प्रथम व प्रमुख अपत्यार्थ है जो कि माता–पिता व सन्तान के साक्षात् सम्बन्ध को बताता है। अनन्तरापत्य पुत्र या दूसरी पीढ़ी का वाचक है। यथा– उपगोरपत्यम् – औपगवः (उपगु का पुत्र), दक्षस्य अपत्यम् – दाक्षिः (दक्ष का पुत्र) इत्यादि।

(ख) गोत्रापत्य :

'गोत्र' शब्द वंश, परिवार, जाति आदि अनेक अर्थों का वाचक है, किन्तु पाणिनि ने इसका विशेष अर्थ में प्रयोग किया है। पौत्र (तीसरी पीढ़ी) से लेकर आगे की सभी पीढ़ियों की सन्तान को गोत्र या गोत्रापत्य कहते हैं। गोत्र–प्रवर्त्तक मूलपुरुष को वृद्ध, स्थविर या वंश्य कहते हैं। उदाहरणार्थ–यदि मूलपुरुष का नाम 'गर्ग' है तो उसका पुत्र 'गार्गि' तथा पौत्र 'गार्ग्य' कहलायेगा।

गोत्र अर्थ के लिए एक ही प्रत्यय लगकर शब्द को गोत्रवाचक बना देता है जो कि आगे की सभी पीढ़ियों के पुत्रों के नाम के रूप में प्रयुक्त होता है। प्राचीनकाल में व्यक्ति के दो नाम प्रचलित होते थे–एक गोत्रनाम तथा दूसरा व्यक्तिगत नाम। यथा– 'राघव' गोत्रनाम है तथा 'राम' वैयक्तिक नाम है। गोत्रसंज्ञक शब्द का विग्रह – 'गोत्रापत्यम्' शब्द लगाकर करते हैं– गर्गस्य गोत्रापत्यम्– गार्ग्यः गर्ग ङस् यञ्।

गोत्र के सन्दर्भ में डॉ॰ वासुदेवशरण अग्रवाल कुछ रोचक तथ्य उपस्थित करते हैं जो द्रष्टव्य हैं––

"गोत्रनाम के अतिरिक्त प्रत्येक व्यक्ति का अपना व्यक्तिगत नाम भी होता था इसलिए महाभारत, जातक आदि प्राचीन ग्रन्थों में व्यक्ति का परिचय पूछते समय नाम और गोत्र दोनों के विषय में प्रश्न किया जाता था। सर्वप्रथम गोत्र नाम की परम्परा प्राचीन ऋषियों से प्रारम्भ हुयी। जमदग्नि, गौतम, भरद्वाज, कश्यप, वशिष्ठ, अगस्त्य, विश्वामित्र व आत्रि इन ऋषियों के नाम पर प्रमुख रूप से आठ गोत्रनाम प्रचलित हुये। कालान्तर में विशेष कीर्ति के कारण अन्य व्यक्तियों के नाम पर भी विविध गोत्र चल पड़े, यहाँ तक कि स्थान विशेष के आधार पर भी गोत्रनाम प्रारम्भ हो गये। इन सब की गणना गोत्रगण के नाम से की गयी है। मूल आठ गोत्र व प्रत्येक के अन्तर्गत आने वाले गोत्रगणों की सूची 'बौधायन श्रौत सूत्र' के अन्त में प्राप्त होती है जिसका नाम 'महाप्रवर काण्ड' है। इस सूची में लगभग एक सहस्त्र नाम हैं।"

ऋषि गोत्रों के अतिरिक्त समाज में बहुत से परिवारों के नाम भी मिलते थे, जिन्हें पाणिनि ने 'गोत्रावयव' नाम से अभिहित किया है।

(ग) युवापत्य :

यदि गोत्रकर्त्ता (= मूलपुरुष) जीवित हो तो चौथी पीढ़ी (प्रपौत्र) की सन्तानों को 'युवापत्य' कहते हैं। युवापत्यार्थक शब्द का विग्रह – 'युवापत्यं' या गोत्रापत्यं युवा' इस प्रकार किया जाता है। युवापत्यार्थक प्रत्यय गोत्रप्रत्ययान्त शब्द से होता है। यथा– गार्ग्यायणः (गर्ग की चतुर्थ पीढ़ी की सन्तान) में गोत्रप्रत्ययान्त, 'गार्ग्य' शब्द से युवापत्य अर्थ में 'फक्' (आयन) प्रत्यय 'यञिञोश्च' (अ॰ – 4–1–101) सूत्र से होकर प्रकृत शब्द निष्पन्न हुआ, जिसका विग्रह वाक्य है– 'गर्गस्य गोत्रापत्यं युवा' – गार्ग्यायणः गार्ग्य फक् (आयन)।

प्राचीनकाल में परिवार संयुक्त होते थे, परिवार का सबसे ज्येष्ठ पुत्र मुखिया होता था, वही गोत्रनाम को धारण करता था, अन्य कनिष्ठ पुत्र 'युवापत्य' कहलाते थे। यदि पिता आदि वंश्य जीवित न हों तो बड़े भाई वंश्यवत् व्यवहार करते थे, तथा अन्य अनुजों की 'युव' संज्ञा होती है अर्थात् वे युवापत्य कहलाते थे। उदाहरणार्थ– 'गार्ग्य' (गर्ग के पौत्र) के दो पुत्र हों तथा पिता आदि सभी वंश्यों की मृत्यु हो चुकी हो, केवल दो भाई ही जीवित हों तो बड़ा भाई 'गार्ग्य' (गर्ग गोत्रोत्पन्न अग्रज पुत्र) उपाधिधारक व परिवार का उत्तराधिकारी तथा छोटा भाई युवा उपाधिवाला होकर 'गार्ग्यायण' (गर्ग गोत्रोत्पन्न छोटा पुत्र) कहलायेगा।

संयुक्त परिवारों की परम्परा केवल पृथक–पृथक परिवारों तक सीमित न थी अपितु पिता की सात पीढ़ियों तक तथा माता की पाँच पीढ़ियों के सभी व्यक्ति 'सपिण्ड' होने से एक बड़े परिवार की भाँति व्यवहार करते थे (यही कारण है कि सगोत्र व सपिण्ड में विवाह प्रतिषिद्ध होता है)। वह ज्येष्ठ पुत्र जो कि 'गार्ग्य' उपाधिधारक है यदि सपिण्ड में कोई उससे स्थविरतर = चाचा आदि जीवित हों तो उनकी अपेक्षा वह भी 'युवापत्य' कहलाता था। अतः ऐसी स्थिति में वह 'गार्ग्यायणः' नाम से जाना जाता था।

सारांश यह है–

1. वंश्य = पिता आदि पूर्व पीढ़ियों के जीवित रहते चतुर्थ पीढ़ी युवापत्य कहलाती है।
2. अवंश्य = बड़े भाई के उत्तराधिकारी होने पर छोटे भाई युवापत्य होते हैं।
3. सपिण्ड स्थविरतर = चाचा आदि के जीवित रहते उत्तराधिकारी बड़ा भाई भी विकल्प से युवापत्य कहलाता है।

ख) अपत्यार्थक प्रकृति :

(क) षष्ठ्यन्त–समर्थ–प्रातिपदिक अपत्यार्थ–प्रत्ययों की प्रकृति है। यथा– उपगोः उपगु ङस्, गर्गस्य गर्ग ङस्, शिवस्य शिव ङस्, विनतायाः विनता ङस् इत्यादि। समस्त अनन्तरापत्य, गोत्रापत्य व तद्राजसंज्ञक प्रत्यय इसी प्रकृति से होते हैं।

(ख) युवापत्यार्थक प्रत्यय गोत्रप्रत्ययान्त प्रकृति से होते हैं, स्त्रीवाचकों को छोड़कर। यथा– गार्ग्यायणः (गर्ग का युवापत्य) गार्ग्य फक् (आयन) दाक्षायणः (दक्ष का युवापत्य) दाक्षि फक् (आयन)।

ग) अपत्यार्थक प्रत्यय :

ऋग्वेद में पाँच अपत्यार्थक प्रत्यय प्राप्त होते हैं– अ, इ, य, एय, आयन। प्रयोग की दृष्टि से सर्वाधिक रूप 'अ' प्रत्ययान्त मिलते हैं। पाणिनि के समय तक आते–आते कुछ और प्रत्यय–इक, इय, ईन, ईय, आर, न स्न आदि भी इस समूह में जुड़ गये जोकि अपत्यार्थक रूपों की विविधता व विकास को सूचित करता है।

पणिनि ने अनुबन्धयुक्त ऊनत्रिंश (29) प्रत्ययों का विधान किया है, जो निम्न हैं–

(1) अञ्, (2) अण्, (3) आरक्, (4) इञ्, (5) ऐरक्, (6) ख (7) खञ् (8) घ, (9) च्फञ्, (10) छ, (11) छण्, (12) ञ्यङ् (13) ठक्, (14) ढक्, (15) ढकञ् (16) ढञ् (17) द्रक्, (18) ण, (19) ण्य, (20) नञ् (21) फक्, (22) फञ्, (23) फिञ्, (24) फिन्, (25) यञ्, (26) यत्, (27) व्यत्, (28) व्यन्, (29) स्नञ्।

अनुबन्धरहित प्रयोगार्ह प्रत्यय चतुर्दश (14) हैं :

(1) अ (2) इ (3) य (4) इक (5) इय (6) ईन (7) ईय (8) एय (9) आयन (10) आयनि (11) आर (12) न (13) स्न (14) ऐर।

अपत्यार्थक प्रत्ययों का वर्गीकरण

सम्पूर्ण अपत्यार्थक प्रत्ययों को दो प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है।

1. रूप के आधार पर।
2. अर्थ के आधार पर।

1. रूप के आधार पर प्रत्ययों का वर्गीकरण

अनुबन्ध लगने पर एक ही प्रत्यय अनेक रूपों वाला हो जाता है। यथा–– 'अ' प्रत्यय अण्, अञ्, ण आदि विविध रूपों को प्राप्त हो गया है परन्तु अनुबन्ध हटाने पर वे सभी 'अ' इस समान रूप वाले हो जाते हैं।

1. अ – अण्, अञ्, ण
2. आर – आरक्
3. आयन, आयनि – फक्, फञ्, च्फञ्, फिञ्, फिन्
4. इ, इक, इय, ईन, ईय – इञ्, ठक्, घ, ख, खञ्, छ, छण्
5. एय, एयक, एर – ढक्, ढञ्, ढकञ्, द्रक्
6. ऐर – ऐरक्
7. य, व्य – ण्य, यञ्, यत्, ञ्यङ्, व्यत्, व्यन्
8. न – नञ्
9. स्न – स्नञ्

रूप के आधार पर एक अन्य प्रकार से भी वर्गीकरण सम्भव है।

मूल प्रत्यय व गौण/संयुक्त प्रत्यय।

मूल प्रत्यय

'अ' तथा 'इ' ये दोनों मूल प्रत्यय ध्वनियाँ है अतः इन दो प्रत्ययों को मूल प्रत्यय मानना चाहिए। जबकि 'य' प्रत्यय को मूल व संयुक्त उभयात्मक माना जा सकता है। 'य' वर्णमाला में अन्तःस्थ–वर्ण के रूप में एक पृथक् ध्वनि स्वीकृत होने से मूल प्रत्यय ध्वनि है।

गौण/संयुक्त प्रत्यय :

आयन, आयनि, इक, इय ईन, ईय, एय, य तथा व्य– में प्रत्यय 'अ' तथा 'इ' प्रत्यय ध्वनियों से विकसित हुए है, कुछ प्रत्ययों में न, क तथा व् ध्वनियों की भी सहायता ली गयी है। स्वतन्त्र ध्वनियों के अभाव में ये प्रत्यय गौण या संयुक्त प्रत्ययों की श्रेणी में रखे जा सकते हैं।

अर्थ के आधार पर प्रत्ययों का वर्गीकरण :

पाणिनि ने अपत्यार्थ के अन्तर्गत तीन प्रमुख अर्थों को समाहित करके अनुशासन किया है।

क) अनन्तरापत्य/अपत्य – पुत्र
ख) गोत्रापत्य – पौत्र
ग) युवापत्य – प्रपौत्र

उक्त तीन प्रमुख अर्थों में कहीं नित्य, कहीं विकल्प से, कभी विशिष्टार्थ जोड़कर तथा कभी दो अर्थों के वाचकरूप से आचार्य ने विभिन्न प्रत्ययों का विधान किया है। अर्थों के आधार पर प्रत्ययों का वर्गीकरण निम्न प्रकार से है–

अनन्तरापत्यार्थक प्रत्यय :

1. नित्य	1. अण्, अञ् (अ)
2. ण्य (य)	3. नञ् (न)
4. स्नञ् (स्न)	5. इञ् (इ)
6. ठक् (इक)	7. ख (ईन)
8. छ, छण् (ईय)	9. ढक् ढञ् (एय)
10. द्रक् (एर)	11. ऐरक् (ऐर)
12. फिञ् (आयनि)	13. व्य, यत् (य)

पत्यार्थक प्रत्ययों के अनुबन्ध व उनके प्रयोजन

अनुबन्ध वह वर्ण या वर्णसमूह होता है जो किसी शब्द या प्रत्यय आदि के आरम्भ या अन्त में लगा होता है। किन्तु प्रयोग के समय उसका लोप हो जाता है। इसका एक अन्य नाम 'इत्' भी है। शब्दानुशासन के लिए यह लघु व उपयोगी साधन है। पाणिनि ने अपने शब्दशास्त्र में अनुबन्धों का सार्थक व सूक्ष्म प्रयोग किया है।

सभी अपत्यार्थक प्रत्ययों में अनुबन्धों का प्रयोग हुआ है। केवल तीन प्रत्यय (ख, घ, छ) अनुबन्धरहित हैं कुछ प्रत्ययों में एक तथा कुछ में एकाधिक अनुबन्ध लगे हैं। कई प्रत्यय ध्वनि में कोई भेद नहीं है। यथा– अण्, अञ् व 'ण' प्रत्ययों में 'ञ्' व 'ण्' अनुबन्धों के कारण विभिन्नता है जबकि तीनों की प्रयोगार्ह प्रत्यय ध्वनि 'अ' समान है। समस्त अपत्यार्थक प्रत्ययों में सात अनुबन्धों का प्रयोग हुआ है।

सर्वाधिक 'ञ्' अनुबन्ध व सबसे न्यून 'ङ्' तथा 'च्' का प्रयोग किया गया है।

अनुबन्धों के प्रयोजन : अपत्यार्थक तद्धित प्रत्ययों में अनुबन्ध दो प्रयोजनों से लगाये गये हैं। (1) स्वर संकेत के लिए। (2) आदि वृद्धि के लिए। च्, त्, न् अनुबन्ध स्वरनियम के लिए तथा ण् आदिवृद्धि के लिए जबकि 'क्' और 'ञ्' का प्रयोग दोनों के लिए किया गया है।

भारतीय आर्यभाषाओं का ईरानी भाषाओं के साथ घनिष्ट सम्बन्ध रहा है विशेष रूप से 'वैदिक संस्कृत' एवं 'अवेस्ता' के मध्य। वैदिक भाषा का आदिस्रोत 'ऋग्वेद' है जबकि ईरानियों का प्राचीन धर्मग्रन्थ 'अवेस्ता' है तथा इसकी भाषा को भी 'अवेस्ता' कहते हैं।

'अवेस्ता' धर्मग्रन्थ की भाषा, शब्दावली व छन्दरचना यहाँ तक की विषयवस्तु भी ऋग्वैदिक मंत्रों से अतिशय साम्य रखती है। यह कोई आश्चर्य का विषय नहीं है क्योंकि भोगोलिक समीपता एवं सांस्कृतिक–आदान प्रदान के कारण दोनों का एक दूसरे से प्रभावित होना स्वाभाविक है।

इन कतिपय उदाहरणों के आधार पर यह कहना कि तद्धित व अपत्यार्थक रूपों का विकास 'ग्रीक या ईरानी' भाषा से हुआ है, समीचीन न होगा। तद्धित व विशेषतया अपत्यार्थक रूप संस्कृत भाषा का अपना निजी विकास है जो कि भारतीय समाज व संस्कृति के सर्वथा अनुकूल है। ये रूप वैदिक काल से प्रारम्भ होकर उत्तरोत्तर भाषा–साहित्य में बढ़ती हुई संख्या में उपलब्ध होते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1० अष्टाध्यायी सूत्रपाठ (पाणिनि) –गुरूकुल वृन्दावन स्नातक शोध, पीतमपुरा, दिल्ली, 2000।
2० कशिकावृत्ति – भाग III, IV – जयशंकरलाल त्रिपाठी, तारा बुक एजेन्सी, (न्यासपदमञ्जरी भावषोधिनीसंहिता) कामाच्छा, वाराणसी, 1984।
3० व्याकरणमहाभाष्य (पतञ्जलि) –आचार्य मधुसूदन प्रसाद मिश्र चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी, 1995
4० निरूक्त (यास्ककृत) भाग I, II –डॉ चन्द्रमणि विद्यालंकार, गुरूकुल झज्जर, हरियाणा
5० पाणिनिकालीन भारतवर्ष – वासुदेव शरण अग्रवाल चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी, 1969
6० संस्कृत भाषा – टी बरो, अनु भोलाशंकर व्यास, चौखम्भा विद्या भवन, वाराणसी

डॉ॰ जागृति के॰ दवे
विभागाध्यक्ष संस्कृत विभाग , श्री दिग्विजयग्राम पंचायत संचालित
आर्टस एण्ड कॉमर्स कॉलेज दिग्विजयग्राम (सिक्का)
(जि॰ जामनगर)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com